भजन

परआत्म के दिल में जो आता है पिया
आत्म वहीं देखने लगती है यहां

1– देखा है खेल हमने चरणों में बैठ कर
उस पल उसी घड़ी से भूले हैं हम पिया

2–चरणों की लीला अर्श में न थी कभी पिया
लाना था जब खेल में पहले ही दिल लिया

3– ये तो रस्म नहीं है अपने धाम में
अपने तनों को खुद से फरामोश कर दिया

4– गर आप चाहो तो यह खेल न रहे
होना है आपसे ही सब कुछ तो ए पिया